डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय

अवध अभिव्यक्ति

विश्वविद्यालय की ई–मासिक पत्रिका

15, नवम्बर 2021

वर्षः 05, अंकः 01

सरदार पटेल और कृपलानी एक आत्मा, दो शरीर थे : प्रो0 मिश्र 03

कृषकों के पास प्रति हेक्टेयर भूमि की उपलब्धता घटी है : प्रो0 सिंह 04

अयोध्या देश की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक राजधानी हैः मुख्यमंत्री

3 नवम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय और उत्तर–प्रदेश शासन के संयुक्त तत्वावधान में पांचवें दिव्य दीपोत्सव में 09 लाख 54 हजार दीपों को जला कर नया कीर्तिमान गिनीज वर्ल्ड रिकार्ड्स में दर्ज किया गया।

कार्यक्रम में प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि अयोध्या दीपोत्सव के इस नये कीर्तिमान का संदेश विश्व भर में गया है। दीपोत्सव से अयोध्या को विश्व पटल पर स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया है। मुख्यमंत्री ने नया कीर्तिमान स्थापित होने पर सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं दी और कहा कि चारों तरफ जलते दीये रामराज्य की संकल्पना को साकार करा रहे हैं। कई दशकों तक अयोध्या उपेक्षित रही और शासन प्रशासन की उपेक्षा का दंश झेला। वर्तमान समय में अयोध्या को उसका गौरव वापस दिलाने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। जिस प्रकार प्रभु श्रीराम के लंका विजय के पश्चात अयोध्या आने पर सजाया गया था, उसी तरह आज पूरी अयोध्या राममय हो गयी है। केंद्र एवं प्रदेश सरकार ने राम के आदर्शों को आम जनमानस के बीच पहुंचाने का कार्य किया है। अयोध्या सिर्फ तीर्थाटन का ही स्थल नहीं है, वरन् देशभर की आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक राजधानी भी है।

कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के मार्गदर्शन एवं नेतृत्व में कई टीमों का गठन किया गया। कुलपति ने बताया कि दीपोत्सव की सफलता में 12 हजार स्वयंसेवकों का अथक योगदान है। कुलपति ने सफलता का श्रेय सभी टीमों के सदस्यों, समन्वयकों एवं स्वयंसेवकों को दिया। दीपोत्सव के नोडल अधिकारी प्रो0 शैलेंद्र वर्मा ने आयोजन में लगे सभी सहयोगियों के प्रति धन्यवाद अर्पित किया और सफलता पर बधाई दी।

प्रो0 शैलेंद्र वर्मा ने बताया कि इस बार 11 लाख 90 हजार दीप सजाए गए थे, इसमें 09 लाख 54 हजार दीपों को प्रज्ज्वलित कर विश्वविद्यालय ने अपने पूर्व के रिकार्ड को पीछे छोड़ नया प्रतिमान स्थापित किया। इसके पूर्व विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के मार्ग–दर्शन में इस बार के दीपोत्सव को भव्य एवं यादगार बनाने के लिए विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा 32 घाटों पर लगभग 200 समन्वयक, 32 पर्यवेक्षक एवं 32 प्रभारी नियुक्त किए गए। इनकी निगरानी में 12 हजार वालंटियर जिसमें विश्वविद्यालय परिसर के कई विभाग, महाविद्यालय, स्वयंसेवी संस्थाएं एवं इण्टर कालेज शामिल रहे। राम की पैड़ी के 32 घाटों पर दीए बिछाने के 14 X 14 ब्लाक एवं रामायणकालीन प्रसंग का पैटर्न दिया गया।

दीपोत्सव में प्रत्येक वालंटियर को लगभग 75 दीए जलाने का लक्ष्य दिया गया था। वहीं राम पैड़ी के घाट नम्बर दो पर आजादी के अमृत महोत्सव का पैटर्न दिया गया उस पैटर्न पर स्वयंसेवकों ने दीए बिछाकर अंतिम रूप दे दिया।

नवाचार एवं सतत विकास की तकनीकों पर कार्य करने की जरूरत : डॉ0 तिवारी

26 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय एवं अंतरराष्ट्रीय भौतिकी अकादमी, प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में 'रीसेन्ट एडवांसेस इन अर्थ साइंसेज' विषय पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय भूभौतिकी अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद के निदेशक डॉ0 वी0एम0 तिवारी ने कहा कि जलवायु परिवर्तन तथा वैश्विक तापन की भीषण समस्या से निजात पाने के लिए वाल्मीकि रामायण में संदर्भित पंक्ति ''उत्साहो बलवानार्य नसत्युसाहात परं बलं'' से मनुष्य की जिजीविषा को उसका परम बल बताते हुए शोधार्थियों को अधिकतम नवाचार तथा सतत विकास की तकनीकों पर कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने भौतिकी विज्ञान में मौजूद समग्र विषयों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए भू–भौतिकी में मौजूद रोजगार के नवीन तकनीकों को भी बताया।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कहा कि पृथ्वी में हो रहे निरन्तर परिवर्तन के सघन शोध के लिए यह आवश्यक है कि उच्च तकनीकों को अपनाया जाये और निरन्तर बदलावों का अध्ययन कर सुरक्षित पर्यावरण के लिए सभी को जागरूक किया जा सके। पृथ्वी प्रणाली में भूमि, वायु और समुद्र के गतिविधियों का असर पर्यावरण सीधे तौर पर पड़ता है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान, गोवा के निदेशक प्रो0 सुनील कुमार सिंह ने रामचरितमानस से संदर्भित करते हुए धार्मिक उपायदेयता पर बताया कि ''क्षिति जल पावक गगन समीरा, हमें अपने ही देश में मौजूद हिन्द महासागर के खनिजों तथा अन्य संसाधनों पर ही पहले ध्यान देना चाहिए। उन्होंने बताया कि भारत की 1.53 बिलियन जनसंख्या में से कम से कम आधी जनसंख्या समुद्रों के संसाधन, उनसे मिलने वाले खनिजों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सके। अनुसंधान की दिशा में अग्रसर होकर अधिक से अधिक प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने के लिए नयी और उन्नत तकनीक की खोज कर सके। दूसरे तकनीकी सत्र में प्रो0 आर0 भाटला, भू–भौतिकी विभागाध्यक्ष बीएचयू ने गंगा बाढ़–ग्रस्त क्षेत्रों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव तथा वैश्विक तापन की समस्याओं पर प्रकाश डाला।

डॉ0 ए0 के0 मित्रा, ने जलवायु पूर्वान. मान तथा चक्रवात जैसी आपदाओं के पूर्वानुमान पर संबंधित अपने शोध अध्ययन को साझा किया। इसी श्रृंखला में अंतरराष्ट्रीय वैज्ञानिक डॉ0 लूनेंन मार्टिन ने भी अपने शोध अध्ययन को साझा किया। उन्होंने आर्कटिक बतख की जनसंख्या पर जलवायु परिवर्तन और हिमखंडों के पिघलने से होने वाले प्रभावों पर किए हुए अपने शोध पत्र को साझा किया।

समापन सत्र को संबोधित करते हए बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के भू–भौतिकी वैज्ञानिक प्रो0 एम0के0 श्रीवास्तव ने आकाशीय बिजली एवं उसके प्रभाव पर प्रकाश डाला। उन्होंने एरोसोल के कारण होने वाले जनहानि एवं उपाय पर प्रतिभागियों को विस्तृत जानकारी भी प्रदान की।

एन0जी0आर0आई, हैदराबाद के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ0 सुभाष चंद्रा ने भविष्य में जल की उपलब्धता एवं उसकी कमी से पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभाव के बारे में एवं उसके निवारण के सम्बन्ध में जानकारी दी। समापन सत्र की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति ने किया। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के सफल आयोजन के लिए आयोजक को बधाई दी। इसी तरह आगे भी कार्यक्रम कराते रहने के लिए प्रेरित किया। सत्र के विशिष्ट अतिथि प्रो0 राम लखन सिंह, कुलपति नीलाम्बर–पीताम्बर विश्वविद्यालय, पलामू, झारखण्ड रहे। उन्होंने पर्यावरण संरक्षण की महत्ता पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी का संचालन प्रो0 जसवंत सिंह ने किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में प्रो. सीके मिश्रा, डीन विज्ञान संकाय, प्रो. सिद्धार्थ शुक्ला, डॉ. विनोद चौधरी, डॉ. सुपर्णा तिवारी, डॉ. शाजिया, डॉ. अरविंद कुमार, डॉ शशिकांत, डॉ. रुद्र प्रताप सिंह, डॉ. संजीव श्रीवास्तव, डॉ. अरविंद वाजपेयी, श्री अमित मिश्रा, और पूर्णिमा दूबे का विशेष योगदान रहा।

खिलाड़ियों की प्रोत्साहन धनराशि में वृद्धि का निर्णय

12 नवम्बर। डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन के सभागार में कुलपति की अध्यक्षता में क्रीड़ा परिषद की महत्वपूर्ण बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में कुलपति प्रो0 सिंह ने अखिल भारतीय अन्तर–विश्वविद्यालयीय खेल प्रतियोगिता, नॉर्थ जोन खेल प्रतियोगिता एवं विश्वविद्यालय खेलो इंडिया प्रतियोगिता में पदक प्राप्त खिलाड़ियों की पुरस्कार धनराशि में बढ़ोतरी किए जाने का निर्णय लिया। इसमें अखिल भारतीय प्रतियोगिताओ के स्वर्ण पदक प्राप्त की धनराशि 21 हजार से बढ़ाकर 25 हजार रूपयें, रजत पदक का 15 हजार से बढ़ाकर 20 हजार रूपयें तथा कांस्य पदक 10 हजार से 15 हजार किए जाने का निर्णय हुआ। वहीं खेलो इंडिया पदक विजेताओं के खिलाड़ियों को भी अखिल भारतीय विश्वविद्यालय खेल प्रतियोगिता के पदक विजेता खिलाड़ियों के समान ही पुरस्कार धनराशि बढ़ाये जाने का निर्णय लिया गया। जिसमें नार्थ जोन विश्वविद्यालयीय खेल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक की पुरस्कार धनराशि 7 हजार से बढाकर 10 हजार किया गया। रजत पदक 5 हजार से बढ़ाकर 7 हजार रूपयें तथा कांस्य पदक की पुरस्कार राशि 3 हजार से बढ़ाकर 5 हजार की गई।

कुलपति द्वारा खिलाड़ियों की पुरस्कार धनराशि में बढ़ोतरी किए जाने के निर्णय पर क्रीड़ा परिषद के उपाध्यक्ष प्रो0 जसवंत सिंह, क्रीड़ा परिषद सचिव डॉ0 आशीष प्रताप सिंह सहित अन्य सदस्यों ने आभार व्यक्त किया। बैठक में विश्वविद्यालय को किक बॉक्सिंग (पुरूष) अखिल भारतीय विश्वविद्यालय खेल प्रतियोगिता के आयोजन, अयोध्या हाफ मैराथन एवं 16 नवम्बर से अन्तर महाविद्यालयीय प्रतियोगिता के शुभारम्भ की तैयारियों पर चर्चा हुई।

बैठक में वार्षिक खेल बजट प्रस्तुत किया गया, साथ ही अन्तरमहाविद्यालयीय खेल प्रतियोगिता सत्र 2021–22 का संशोधित खेल कैलेंडर भी पटल पर रखा जिसका अनुमोदन क्रीड़ा परिषद द्वारा किया गया। बैठक में विश्वविद्यालय क्रीड़ा परिषद सचिव डॉ0 आशीष प्रताप सिंह ने पूर्व में सम्पन्न हुई क्रीड़ा परिषद की बैठकों के प्रस्ताव, निर्णय और उनके क्रियान्वयन पर विस्तृत आख्या रखी। इसकी पुष्टि क्रीड़ा परिषद के सदस्यों द्वारा की गई। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ, वित्त अधिकारी प्रो. चयन कुमार मिश्र, प्रो0 एस0एस0 मिश्र, डॉ0 मुकेश कुमार वर्मा सहित अन्य उपस्थित रहे।

श्रीराम शोधपीठ एवं रिपब्लिक ऑफ त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो के मध्य हुआ एमओयू

26 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के श्रीराम शोधपीठ एवं हायर एजुकेशनल इंस्टीट्यूशन ऑफ रिपब्लिक ऑफ त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो के मध्य एमओयू किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह एवं रिपब्लिक ऑफ त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो के उच्चायुक्त डॉ0 रोजर गोपाल के बीच अनुबंध पर हस्ताक्षर किया गया। कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि इस एमओयू से दोनों संस्थानों के बीच संयुक्त रूप से शोध कार्य किए जायेंगे। शैक्षणिक एवं वैज्ञानिक सूचनाओं एवं गतिविधियों को साझा किया जायेगा। इसके साथ ही दोनों देश के शोधार्थी संयुक्त रूप से महत्वपूर्ण पूर्ण सूचनाओं का प्रकाशन एवं संग्रहण का कार्य करेंगे। रिपब्लिक ऑफ त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो के उच्चायुक्त डॉ0 रोजर गोपाल ने बताया कि अनुबंध से दोनों संस्थान संयुक्त रूप से संगोष्ठी, कांफ्रेस और कार्यशाला का आयोजन करेंगे। सामरिक दृष्टि से विश्वविद्यालय एवं त्रिनिदाद एण्ड टोबैगो के मध्य शैक्षणिक कार्यों को बढ़ावा मिलेगा। कला संकायाध्यक्ष एवं श्रीराम शोध–पीठ के समन्वयक प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने बताया कि एमओयू के होने से दोनों देशों के बीच शोध कार्यों को बढ़ावा मिलेगा। छात्रों को कॅरियर बनाने का सुनहरा अवसर प्राप्त होगा। इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, अधिष्ठाता छात्र–कल्याण प्रो0 नीलम पाठक, नैक के समन्वयक प्रो0 फारूख जमाल, डॉ0 संग्राम सिंह, डॉ0 विनोद चौधरी, डॉ0 शैलेन्द्र सिंह उपस्थित रहे।

मंथन

15 नवम्बर 2021: कार्तिक मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी, विक्रम संवत् 2078

' बेहतरीन दिनों के लिए बुरे दिनों से लड़ना पड़ता है '

कोरोना की पुनः दस्तक

समूची दुनिया पिछले दो वर्षो से वैश्विक महामारी का सामना कर रही है। अभी जनमानस धीरे–धीरे अपने दैनिक कार्यो को सामान्य स्थिति में लाने के लिए प्रयत्न ही कर रहा था कि कोरोना के एक नये अफ्रीकी वैरियंट ओमीक्रोन ने पुनः दस्तक देकर वैश्विक पटल पर भय पैदा कर दिया। ओमीक्रान पहले के वायरस से लगभग 40 प्रतिशत अधिक घातक बताया जा रहा है। इससे बचाव के कुछ नये मानदंड तय करने के विश्वभर के चिकित्सा वैज्ञानिक पुनः प्रयोगशाला में दिन–रात एक कर समाधान तलाश रहे है। समूची धरती पर व्याप्त यह संकट मानव की विनाशकारी नीति का ही प्रतिफल है। कई शोधो से यह स्पष्ट हो चुका है कि यह वायरस गैर प्राकृतिक है अर्थात मानव द्वारा निर्मित किया गया है। कोरोना वायरस ने विकसित एवं गैरविकसित देशों में जो कहर बरपाया है उसे सदियो तक भुला पाना संभव नहीं है। कोरोना वायरस की शुरूआत चीन के वुहान लैब से पुरी दुनिया में फैल गया। यह और घातक तब हुआ जब इससे होने वाले संक्रमण को एक लम्बे समय तक छुपाया गया। मानवता पर व्याप्त यह संकट एक बार पुनः सभ्य समाज की अग्नि परीक्षा लेने के लिए आतुर है। भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले देश के समक्ष पहले से आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक चुनौतियां थी, ऐसे में दो वर्षो से भारतीय अर्थव्यवस्था भी वैश्विक मंदी का दंश झेल रही थी। पिछले कुछ महीनों से धीरे–धीरे जन मानस अपने दैनिक कार्यो की ओर लौट रहा था कि फिर से आ रही यह आहट उसे पुनः सर्तक होने का संकेत दे रही है। भारत एक विकासशील देश है, यहां पर बहुतायत की संख्या में नागरिक रोजगार के लिए महानगरों की ओर जाते हैं जो कोरोना के संक्रमण से भयग्रस्त हो कर अपने–अपने घरों को लौट आये। जैसे–तैसे पुनः नगरों की तरफ जीवकोपार्जन के लिए जाना इस भयपूर्ण परिवेश में कठिन हो रहा है। शिक्षण संस्थान, औद्योगिक इकाइयों को पुनः नये सिरे से उस भयावहता से निपटने की व्यापक कार्ययोजना तैयार करनी होगी और सावधानी ही सर्वोत्तम बचाव है। सभी नागरिकों को इसकी गंभीरता को दृष्टिगत रखते हुए कोविड के गाइड लाइन को दिनचर्या में शामिल करना होगा।

संचार क्रांति का सशक्त माध्यम है टेलीविजन

जागृति

टेलीविजन संसार का सर्वाधिक सुलभ एवं सशक्त माध्यम है। इसने संचार क्रांति के क्षेत्र में अप्रतिम योगदान दिया है। उपग्रह तकनीक एवं विभिन्न चैनलों के माध्यम से इसका व्यापक प्रसार हुआ है। यही कारण है, कि आज देश के हर कोने के अधिकतर घर में टेलीविजन है। वर्ष 1980 के दौरान टेलीविजन का विकास तेजी से हुआ। जैसे–जैसे टेलीविजन का प्रसार हुआ उसका व्यावसायिक रूप विस्तृत होता गया। पहला विश्व टेलीविजन फोरम 1996 में आयोजित किया गया था। संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 21 नवंबर को विश्व टेलीविजन दिवस के रूप में चिन्हित किया।

संचार के माध्यमों में दूरदर्शन का प्रयोग सर्वप्रथम 1884 में हुआ था। इसके पश्चात अमेरिका (1890), फ्रांस (1900) में टेलीविजन को एक सीमित दायरे में प्रसारण के लिए प्रयोग के रूप में प्रारंभ किया गया। विश्व में सर्वप्रथम 1920 में बोलते चित्रों का सफल प्रयोग किया गया। 1926 तक दूरदर्शन इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का एक सशक्त माध्यम बन गया। भारत में टेलीविजन प्रसारण का शुभारम्भ 15 सितम्बर 1959 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद के द्वारा किया गया। 1961 में भारत के लगभग 250 स्कूलों में टेलीविजन सेट्स उपलब्ध कराए गए। 1965 में एक घंटे का नियमित दूरदर्शन प्रसारण शुरू हुआ।

टेलीविजन का सफर भले ही पुराना हो, लेकिन यह आज भी अपने मॉडर्न रूप में हमारे बीच है , टेलीविजन हमें सूचना देने के साथ–साथ मनोरंजन का कार्य भी करता है। यह शिक्षा, खबर और राजनीति से जुड़ी गतिविधियों के बारे में सूचना देता है। टेलीविजन समाचार प्रदान करके समाज में अहम् भूमिका निभाता है। टेलीविजन के समाचारों के अनेक स्रोत होते हैं विभिन्न समाचार एजेंसियों से समाचार लगातार प्राप्त होते रहते हैं। टेलीविजन के अनेक क्षेत्रीय केंद्रों द्वारा भी आंचलिक समाचारों एवं घटनाओं का कवरेज किया जाता है। विभिन्न टेलीविजन चैनलों द्वारा विभिन्न शहरों में संवाददाता नियुक्त किए जाते हैं, जो समय–समय पर उन्हें घटनाओं की जानकारी उपलब्ध कराते रहते हैं। टेलीविजन के द्वारा खेल प्रतियोगिता की सूचना भी आसानी से प्राप्त हो जाती है।

टेलीविजन के आविष्कार ने सूचना के क्षेत्र में एक क्रांति का आगाज किया था। दूसरी क्रांति का आगमन उस समय हुआ, जब वैश्विक स्तर पर टेलीविजन के महत्व के बारे में लोगों को पता चला और लोगों ने इसे स्वीकार कर लिया। दूरदर्शन की देश में महानगरों में शुरुआत दिल्ली (01 अगस्त 1984) मुंबई (01 मई 1985) चेन्नई (19 नवंबर1987) कोलकाता (01 जुलाई 1988) तथा 26 जनवरी 1993 को मेट्रो चैनल शुरू करने के लिए एक दूसरे चैनल की नेटवर्किंग हुई । 14 मार्च 1995 को अंतरराष्ट्रीय चैनल डीडी इंडिया की शुरुआत हुई तथा 23 नवंबर 1997 को प्रसार भारती का गठन हुआ । 18 मार्च 1999 को खेल चैनल डीडी स्पोर्ट्स की शुरुआत हुई । 26 जनवरी 2002 को सांस्कृतिक चैनल की शुरुआत हुई एवं 03 नवंबर 2002 को 24 घंटे के समाचार चैनल डीडी न्यूज शुरुआत हुई तथा 16 दिसंबर को निशुल्क डीटीएच सेवा डायरेक्ट की शुरुआत हुई। टेलीविजन को जनता को प्रभावित करने में एक प्रमुख साधन के रूप में स्वीकार किया गया है। वर्तमान में टेलीविजन मनोरंजन और ज्ञान का सबसे बड़ा स्रोत हो चुका है, लेकिन साथ में यह भी माना जा रहा है, कि इसके नकारात्मक प्रभाव भी दृष्टिगत हो रहे हैं, इसके नकारात्मक प्रभाव को रोकने और गलत संस्कृति पर रोक लगाने के लिए इसके ऊपर कुछ कानूनी प्रतिबंध भी आरोपित किए जाने चाहिए।

प्रेस अधिकारों का संरक्षक है प्रेस परिषद

युक्ति गुप्ता

राष्ट्रीय प्रेस परिषद की स्थापना 16 नवंबर 1966 को भारतीय प्रेस द्वारा प्रदान की गई रिपोर्ट की गुणवत्ता की निगरानी के लिए की गई थी। 16 नवंबर को प्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया, एक वैधानिक और अर्ध–न्यायिक प्रतिष्ठान को स्वीकार करने और सम्मानित करने के लिए मनाया जाता है।

भारतीय प्रेस परिषद यह सुनिश्चित करने में एक नैतिक प्रहरी के रूप में कार्य करती है कि भारतीय पत्रकार किसी प्रभाव या बाहरी कारकों से प्रेरित नहीं हैं। न्यायमूर्ति चंद्रमौली कुमार प्रसाद भारतीय प्रेस परिषद के वर्तमान अध्यक्ष हैं। उन्हें दूसरे कार्यकाल के लिए नियुक्त किया गया है। उन्होंने परिषद के अध्यक्ष बनने के लिए न्यायमूर्ति मार्कंडेय काटजू (2011– 2014) का स्थान लिया।

परिषद भारतीय प्रेस के लिए एक प्रहरी के रूप में कार्य करती है। यह सुनिश्चित करती है कि पत्रकार किसी भी कहानी की रिपोर्ट करते समय बाहरी प्रभावों या कारकों से प्रेरित न हों।

पीसीआई का कर्तव्य देश में सभी पत्रकारिता गतिविधियों को विनियमित, जांच और निगरानी करना है। यह सुनिश्चित करता है कि पत्रकारिता की विश्वसनीयता बरकरार रहे क्योंकि भारत में प्रेस को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ भी माना जाता है। प्रेस परिषद के गठन के बाद से, इस दिन को मनाने के लिए 16 नवंबर को प्रेस परिषद द्वारा विभिन्न संगोष्ठियों का आयोजन किया जाता है। अधि–नियम, संकट की स्थिति में मीडिया की भूमिका, नागरिकों के बीच मौलिक कर्तव्यों के बारे में जागरूकता फैलाने में मीडिया की भूमिका और लोगों को इससे निपटने के लिए तैयार करने में मीडिया की भूमिका जैसे विभिन्न मुद्दों पर सेमिनार आयोजित किए गए हैं। आपदाएं सेमिनार एक या दो दिनों के लिए आयोजित किए जाते हैं और लोगों को देश में एक स्वतंत्र और जिम्मेदार प्रेस के महत्व के बारे में शिक्षित करते हैं।

वर्ष 1956 में, प्रथम प्रेस आयोग ने वैधानिक अधिकार के साथ एक निकाय बनाने का निर्णय लिया, जिसके पास पत्रकारिता की नैतिकता को बनाए रखने की जिम्मेदारी है।

आयोग ने महसूस किया कि प्रेस के लोगों को जोड़ने और किसी भी मुद्दे पर मध्यस्थता करने के लिए एक प्रबंध निकाय की आवश्यकता थी। इसलिए, दस साल बाद, प्रेस आयोग द्वारा 16 नवंबर, 1996 को पीसीआई का गठन किया गया। तब से भारत का राष्ट्रीय प्रेस दिवस हर साल 16 नवंबर को परिषद की स्थापना के उपलक्ष्य में मनाया जाता है।

नागरिक अधिकारों के प्रति सजग करता है संविधान

शिवानी तिवारी

26 नवंबर को हमारे देश में राष्ट्रीय संविधान दिवस मनाया जाता है। इसको मनाने के पीछे का उद्देश्य हमारे देश के संविधान को बनाने वाले डॉ0 भीमराव आम्बेडकर को याद करना है, जिन्होंने संविधान की स्थापना की। वर्ष 1949 में 26 नवंबर ही वह खास दिन था, जिस दिन हमारे संविधान सभा ने संविधान को अंगीकार किया।

हमारे भारत में राष्ट्रीय कानून दिवस जो कि प्रतिवर्ष 26 नवंबर को मनाया जाता है, इसको मनाने के पीछे का कारण यह है कि लोगों को संविधान के बारे में उसकी आवश्यकता क्यों है। कानून लागू करना और लोगों को कानून के आधार पर उनके अधिकारों के बारे में भी जानकारी हो, इस जागरूकता को फैलाने के लिए 26 नवंबर 1949 को भारतीय संविधान को स्वीकार आ गया था। इसके तहत हमारे देश के राजनीतिक सिद्धांत उनकी संरचना विधि और सरकारी संस्थानों की शक्तियों के बारे में भी इसका विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। अगर संविधान में कानून बनाने की बात करें, तो इसके तहत 448 अनुच्छेद 25 भाग तथा 12 अनुसूचियां हैं। इसके साथ ही सरकार के कार्यों का वर्णन किया गया है, इसमें हमारे देश के नागरिकों के मूल अधिकार हैं, और उनके कर्तव्य हैं।

सरकार की क्या–क्या भूमिका होती हैं , अथवा राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री, राज्यपाल को क्या–क्या शक्तियां दी जानी चाहिए, इन सभी का वर्णन इस कानून के तहत किया गया है।

कानून बनाने के लिए इसके कुछ हिस्से जिसको यूनाइटेड किंगडम ,अमेरिका, जर्मनी, आयरलैंड, कनाडा और जापान के संविधान से अपनाए गए हैं। संविधान दिवस की बात करें, तो इसको मनाने की घोषणा मोदी सरकार ने 26 नवंबर 2015 को की। प्रधानमंत्री ने रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' का 50 वा संस्करण पेश किया, जिसमें उन्होंने संविधान दिवस मनाने का जिक्र किया। 2015 में उन्होंने कहा कि देश में संविधान को अपनाए हुए 70 साल हो जाएंगे इसी दिन हमारा संविधान बनकर तैयार हुआ था। जिसको बनाने में 2 वर्ष 11 माह 18 दिन लगे थे। संविधान दिवस मनाने का मुख्य कारण डॉ0 भीमराव आम्बेडकर को याद करना है और उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि देना है।

इस बार कानून दिवस मनाना इसलिए भी खास होगा, क्योंकि पहली बार ब्रेल लिपि में लिखी गई संविधान सभा को जारी किया जाएगा। इसे एक बौद्ध संस्थान सावी फाउंडेशन के साथ मिलकर तैयार किया है।

जन–अभिव्यक्ति

अवध अभिव्यक्ति ई–मासिक पत्रिका विश्वविद्यालय की गतिविधियों का समग्र प्रस्तुतीकरण है। इसमें प्रकाशित समाचार, लेख आदि हम पाठको का ज्ञानवर्धन करते हैं।

– आशु शुक्ला

सुविचार

"सबसे उत्तम तीर्थ अपना मन है जो विशेष रूप से शुद्ध किया हुआ हो।"

– स्वामी शंकराचार्य

आप सुधी पाठकों के विचार सादर आमंत्रित हैं।

avadhabhivyakti@gmail.com

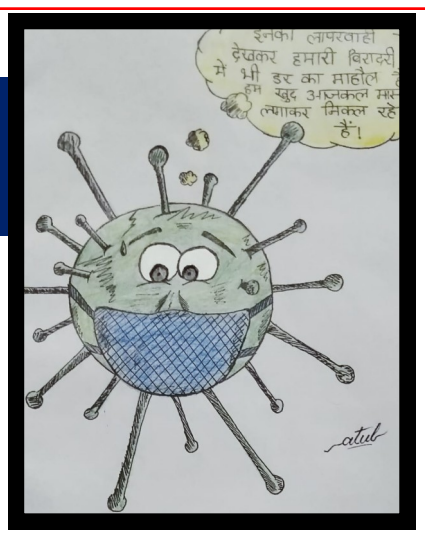

प्रमुख संरक्षक
प्रो0 रवि शंकर सिंह
संरक्षक
डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी,
समन्वयक
प्रकाशक
श्री उमानाथ, कुलसचिव
सम्पादकीय मण्डल
डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा
डॉ0 राज नारायण पाण्डेय
डॉ0 अनिल कुमार विश्वा
संकलन एवं सम्पादन
शशांक, अंशुमान, बलराम

avadhabhivyakti@gmail.com

Feedback

डिस्क्लेमर : ई–पत्रिका का प्रकाशन पूरी तरह से शैक्षणिक विकास को समर्पित है, इसका कोई भी व्यावसायिक हित नहीं है। सर्वाधिकार @ डॉ0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या।

प्रो0 एस0 के0 गर्ग लाइफटाइम माइक्रोबायोलॉजी डिवोशन अवार्ड से हुए सम्मानित

29 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के माइक्रोबायोलॉजी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो0 एस0 के0 गर्ग को लाइफटाइम माइक्रोबायोलॉजी डिवोशन अवार्ड 2021 से सम्मानित किया गया। अवध विश्वविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, राजा बलवंत सिंह इंजीनियरिंग टेक्निकल कैंपस आगरा एवं एमएलकेपीजी कॉलेज बलरामपुर के संयुक्त तत्वाधान में सूक्ष्मजीवों के साथ उधमिता विषय पर आयोजित एक ई–कॉन्फ्रेंस में सम्मानित किया। कांफ्रेंस के आयोजक एमएसआई सोसायटी के अध्यक्ष प्रो0 ए0एम0 देशमुख ने पांच सीनियर प्रोफेसरों क्रमशः अवध विश्वविद्यालय के माइक्रो–बायोलॉजी विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो0 एस0

इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो0 अनुपम दीक्षित एवं आईसीएआर नई दिल्ली के डॉक्टर एसपी दुबे को लाइफटाइम माइक्रोबायोलॉजी डिवोशन अवार्ड 2021 से सम्मानित किया गया। इस कॉन्फ्रेंस में सात देशों ब्राजील, जर्मनी, हांगकांग, ओमान, श्रीलंका, साउथ अफ्रीका एवं यूएसए के वरिष्ठ वैज्ञानिक शामिल रहे। कार्यक्रम में अवध विश्वविद्यालय माइक्रोबायोलॉजी विभागाध्यक्ष डॉ0 शैलेंद्र कुमार, डॉ0 प्रवीण वर्मा, डॉ0 सुरेंद्र वर्मा, डॉ0 राजेश कुमार पांडे की उपस्थिति में पांचों विद्वान प्रोफेसरों को सम्मानित किया गया।

कौशल किशोर सिंह अध्यक्ष व कृष्णलाल महांमत्री बने

09 नवम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संघ का चुनाव सरदार पटेल प्रशासनिक भवन के प्रथम तल स्थित कुलसचिव सभाकक्ष में सम्पन्न हुआ।

मतगणना के उपरान्त अध्यक्ष पद पर कौशल किशोर सिंह 27 मत पाकर विजयी घोषित हुए। वहीं दूसरी ओर राघव राव को 20 मत प्राप्त हुए। उपाध्यक्ष पद पर जितेन्द्र बहादुर सिंह 36 मत प्राप्त कर विजयी रहे। द्वितीय स्थान पर राम निहोरे को 11 मत प्राप्त हुए। महामंत्री के पद पर कृष्णलाल 33 मत पाकर विजयी रहे। सन्तोष कुमार कौशल को 14 मत प्राप्त हुए। उप महामंत्री पद पर जफर सलमान, संगठन मंत्री पद पर राजेश कुमार पाठक एवं कोषाध्यक्ष पद पर आशाराम निर्विरोध निर्वाचित हुए।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के निर्देश पर कर्मचारी संघ का चुनाव बृज भूषण मिश्र, अध्यक्ष एवं रामेश्वर पाण्डेय, उपाध्यक्ष उत्तर प्रदेश राज्य विश्वविद्यालय कर्मचारी महासंघ तथा डॉ० राजेश कुमार सिंह, अध्यक्ष व विपिन कुमार यादव, महामंत्री तृतीय श्रेणी कर्मचारी परिषद, अ०वि०वि० अयोध्या द्वारा सम्पन्न कराया गया।

चुनाव डॉ० रीमा श्रीवास्तव, सहायक कुलसचिव, डॉ० मोहन चन्द्र तिवारी एवं शरीफ अहमद की निगरानी में सम्पन्न हुआ।

सरदार पटेल और कृपलानी एक आत्मा, दो शरीर थेः प्रो0 मिश्र

01 नवम्बर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के अमर शहीद संत कँवरराम साहिब सिंधी अध्ययन केंद्र में आयोजित सिंधी, सिंध और सरदार पटेल विषय पर आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे विश्वविद्यालय के वित्तअधिकारी प्रो0 चयनकुमार मिश्र ने कहा कि ब्रिटिश भारत के सिंध प्रदेश में देश की आजादी के लिए चलाए जा रहे आन्दोलन के तरीकों से कांग्रेस के तत्कालीन राष्ट्रीय नेता बहुत प्रभावित थे, उनमें से सरदार पटेल एक थे। सरदार पटेल ने अनेक अवसरों पर डॉ0 चोइथराम गिदवानी, जयरामदास दौलतराम और आचार्य कृपलानी के कार्यों की सराहना भी की थी। प्रो0 मिश्र ने कहा कि सरदार पटेल ही कृपलानी को गुजरात विद्यापीठ ले गए थे। सरदार वल्लभ भाई पटेल और आचार्य जे0 बी0 कृपलानी एक आत्मा, दो शरीर थे। उनके परस्पर सम्बन्ध इतने प्रगाढ़ थे कि प्रत्येक फैसला वे साथ–साथ लेते थे। जहाँ उन्हें 06 साल तक एक दूसरे को नजदीक से जानने समझने का न केवल अवसर मिला बल्कि कृपलानी को इसी दौरान आचार्य की पदवी भी मिली।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि वास्तुविद् अनूप रामानी ने बताया कि 1946 में आचार्य कृपलानी को कांग्रेस के अध्यक्ष पद के लिए सरदार पटेल ने ही समर्थन किया था। रामानी ने इसी परिप्रेक्ष्य में एक सवाल उठाया कि इस विषय पर खोज होनी चाहिए कि विभाजन के समय कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर जे0 बी0 कृपलानी के होने के बावजूद आधा पंजाब और आधा बंगाल तो भारत को मिला, किन्तु राजस्थान सीमा से जुड़े सिंध का एक भी हिंदू बहुल गाँव भारत को नहीं मिल सका।

इस अवसर पर एम0 ए0 सिंधी के विद्यार्थियों रेखा खत्री, शालिनी साधवानी, संगीता खटवानी, जयप्रकाश क्षेत्रपाल, आरती केशवानी, अशोककुमार, पायल मोटवानी और सागर माखेजा ने अपने शोध आलेख प्रस्तुत किए। अध्ययन केंद्र के मानद निदेशक प्रो0 आर0 के0 सिंह ने स्वागत तथा आभार एवं संचालन केंद्र के मानद सलाहकार ज्ञानप्रकाश टेकचंदानी 'सरल' ने किया।

राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों की चयन प्रक्रिया सम्पन्न

27 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में पूर्व गणतन्त्र दिवस परेड शिविर के तहत विश्वविद्यालय स्तर पर राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वंयसेवकों की सहभागिता की चयन प्रक्रिया परिसर के मदनमोहन मालवीय केन्द्रीय पुस्तकालय में सम्पन्न हुई।

आयोजन में विश्वविद्यालय से सम्बद्ध विभिन्न महाविद्यालयों के राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों द्वारा प्रतिभाग किया गया। चयन प्रक्रिया का शुभारम्भ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो० रविशंकर सिंह द्वारा किया गया।

चयन प्रक्रिया प्रारम्भ होने के पूर्व स्वयंसेवकों द्वारा स्वच्छ भारत अभियान के अन्तर्गत परिसर में अपशिष्ट प्लास्टिक का संकलन कर परिसर की स्वच्छता की गयी। चयन प्रक्रिया में स्वयंसेवकों की ऊचाई, वजन, दौड, ड्रिल आदि हवलदार विनय क्षेत्री, 65 यू०पी० बटालियन, एन०सी०सी० की देखरेख में सम्पन्न हुआ। प्रतियोगिता के उपरान्त साक्षात्कार व सांस्कृतिक गतिविधियों में प्रतिभाग की प्रक्रिया राजेश तिवारी, क्षेत्रीय निदेशालय, लखनऊ, श्री उमानाथ कुलसचिव/कार्यक्रम समन्वयक राष्ट्रीय सेवा योजना एवं डॉ० मोहन चन्द्र तिवारी, प्रभारी एन०एस०एस० के निर्देशन में सम्पन्न हुई। चयन प्रक्रिया में प्रो० आर०के० सिंह, पुस्तकालयाध्यक्ष श्री शरीफ अहमद, श्री सन्तोष कौशल, कुव पूजा, डॉ० बीरबल शर्मा, डॉ० गीता त्रिपाठी, डॉ० नीलम तिवारी, श्री अभिमन्यु त्रिपाठी तथा सम्बद्ध महाविद्यालयों के प्राचार्य एवं राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रमाधिकारी उपस्थित रहे।

चयन प्रक्रिया में सम्मिलित स्वयंसेवकों के परिणाम की घोषणा यथाशीघ्र राष्ट्रीय सेवायोजना क्षेत्रीय निदेशालय, लखनऊ द्वारा की जायेगी।

घरेलू हिंसा के प्रति महिलाओं को सजग रहने की जरूरत

16 अक्टूबर। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित मिशन शक्ति अभियान फेज–थ्री के तहत डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के महिला अध्ययन केंद्र तथा वीमेन ग्रीवेंस एंड वेलफेयर सेल द्वारा घरेलू हिंसा अधिनियम के अंतर्गत महिला सुरक्षा विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता फैमिली काउंसलर, वाराणसी की उमा मिश्रा ने बताया कि महिलाओं के स्वभाव में अच्छी बातों को ग्रहण करने की आदत होती है। विपरीत परिस्थितियों में उनके अन्दर सहन करने की क्षमता कम हो जाती है। उन्होंने कहा कि घरेलू हिंसा का मुख्य कारण है कि छोटी–छोटी बातों पर ताना मारना और बाद में यही ताना बड़ी समस्याओं में परिवर्तित हो जाती है। उन्होंने बताया कि इस तरह की घटनाओं के सबसे पहले मजिस्ट्रेट के पास कम्प्लेन करना चाहिए। यदि कोई महिला मजिस्ट्रेट के पास आवेदन नहीं कर पा रही है तो ऐसी स्थिति में उस महिला की ओर से प्रोटेक्शन ऑफिसर मजिस्ट्रेट के यहां आवेदन कर सकता है। इसके लिए प्रत्येक जिले में प्रोटेक्शन ऑफिसर नियुक्त है। उन्होंने छात्राओं को बताया कि प्रोटेक्शन ऑफिसर आवेदन की जांच करने के उपरांत घरेलू हिंसा के मामले में 3 दिन के अंदर सुनवाई करता है। इसके साथ ही सात दिन के अंदर पूरे मामले का निस्तारण कर दिया जाता है। उन्होंने बताया कि घरेलू हिंसा अधिनियम–14 में काउंसलिंग का भी प्रावधान है जिसमें सबसे पहले दो पक्षों के बीच बंद कमरे में ऑन कैमरा काउंसिलिंग की जाती है। जिससे आपसी समस्या का समाधान निकाला जा सकें। वेबिनार में महिला अध्ययन केंद्र और महिला शिकायत एवं प्रकोष्ठ कल्याण की समन्वयक प्रोफेसर तुहिना वर्मा ने अतिथि एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह की दिशा–निर्देशन में कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि घरेलू हिंसा में सिर्फ दो पक्ष ही नहीं बल्कि परिवार के प्रत्येक सदस्य विशेषकर बच्चे ज्यादा प्रभावित होते हैं जिसका असर उनके मानसिक स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। वेबिनार में प्रोफेसर वर्मा द्वारा सभी अभिभावकों को बालिका सुरक्षा शपथ भी दिलवाई गई। कार्यक्रम का संचालन प्रतिभा त्रिपाठी ने किया। तकनीकी सहयोग इं0 राजीव यादव, मनीषा यादव एवं महिमा चौरसिया ने किया। इस अवसर पर डॉ0 डी0 के0 सिंह, डॉ0 स्नेहा पटेल, डॉ0 गायत्री वर्मा सहित छात्र एवं छात्राएं आनलाइन जुड़े रहे।

स्वच्छता को दैनिक जीवन में अपनाएंः कुलपति

14 नवम्बर। डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के नेतृत्व में शनिवार को फिर चलाया गया स्वैच्छिक श्रमदान एवं स्वच्छता अभियान। इसकी शुरूआत कुलपति ने कौटिल्य प्रशासनिक एवं सरदार पटेल प्रशासनिक भवन के परिसर से की। इनके साथ विश्वविद्यालय के कुलसचिव उमानाथ, वित्त अधिकारी प्रो0 चयन कुमार मिश्र एवं मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह ने भी स्वैच्छिक श्रमदान एवं साफ–सफाई की। यह स्वच्छता अभियान विश्वविद्यालय के मुख्य परिसर से लेकर आईईटी परिसर तक चला। इसमें अधिकारियों, शिक्षकों एवं कर्मचारियों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया।

इस अभियान पर कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने सभी से कहा कि स्वच्छता को दैनिक जीवन में अवश्य अपनाएं। साथ ही इसके लिए सभी को जागरूक करें। श्रमदान हमारे स्वास्थ्य के लिए भी हितकर है। श्रम करने से व्यक्ति रोगों से मुक्त रह सकता है।

विश्वविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी ने बताया कि विश्वविद्यालय में प्रत्येक शनिवार को प्रातः 7 बजे से 9 बजे तक स्वैच्छिक श्रमदान एवं स्वच्छता अभियान फिर से चलाया गया है। इसमें कुलपति प्रो0 सिंह के दिशा–निर्देशन में परिसर के शिक्षक, अधिकारी एवं कर्मचारी विभागों एवं आस–पास के स्थानों पर स्वैच्छिक श्रमदान कर साफ–सफाई करेंगे। इससे पहले कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह द्वारा छह माह से अधिक समय तक परिसर में स्वच्छता अभियान चलाया गया था।

इसी क्रम में शनिवार को मुख्य परिसर एवं आईईटी परिसर में शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया एवं स्वैच्छिक श्रमदान कर साफ–सफाई की।

छात्रों ने किया मुख्य डाकघर व दर्शननगर मेडिकल कालेज का भ्रमण

25 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की कुलाधिपति एवं प्रदेश की राज्यपाल के दिशा–निर्देशन में विश्वविद्यालय के एक्टीविटीज क्लब व महिला अध्ययन केन्द्र द्वारा छात्र–छात्राओं की टोली ने शिक्षकों की उपस्थिति में मुख्य डाकघर एवं राजश्री दशरथ मेडिकल कालेज, दर्शन नगर का भ्रमण किया।

छात्र परिसर में जाकर डाकघर की कार्यप्रणाली व उनके क्रियाकलापों से अवगत हुए। विश्वविद्यालय की कुलाधिपति एवं श्रीराज्यपाल श्रीमती आनन्दीबेन पटेल के आदेशानुसार विश्वविद्यालय के छात्रों को ऐसे स्थलों का भ्रमण कराने की बात कही थी जिससे छात्रों को व्यवहारिक जीवन में कार्य करने में परेशानी का समाना न करना पड़े। इसी क्रम में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के निर्देश पर एक्टीविटीज क्लब व महिला अध्ययन केन्द्र ने छात्रों की टोली को भ्रमण कराया गया। प्रो0 तुहीना वर्मा, डॉ0 मुकेश कुमार वर्मा, डॉ0 मनीष सिंह, डॉ0 संघर्ष सिंह, डॉ0 स्नेहा पटेल के निर्देशन में डाकघर अधीक्षक की उपस्थिति में सभी काउंटर पर दी जा रही सभी सुविधाओं की विस्तारपूर्वक जानकारी उपलब्ध कराई। भ्रमण के दौरान छात्रों ने सुकन्या समृद्धि योजना के बारे में भी जाना। इस योजना में बालिका की पढ़ाई, विवाह या अन्य किसी कार्य का लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

इसी क्रम में में छात्रों की टोली ने राजश्री दशरथ मेडिकल कालेज दर्शन नगर का भ्रमण किया। डॉ0 महेंद्र पाल सिंह, अनुराग सोनी, देवेंद्र कुमार वर्मा के नेतृत्व में छात्र–छात्राओं ने चिकित्सालय की प्राचार्य डॉ0 राधिका सिंह से मुलाकात की और उनसे मेडिकल कॉलेज में उपलब्ध सुविधाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। छात्रों ने आयुष्मान भारत योजना की जानकारी के साथ ओपीडी का समय, ऑपरेशन रूम, कोविड वार्ड, वैक्सीनेशन सेंटर, ऑक्सीजन प्लांट के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

- अवध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह की अध्यक्षता में नेशनल इंस्टीट्यूशन रैकिंग फ्रेमवर्क व नेशनल एसेसमेंट एंड एक्रिडेशन काउंसिल (नैक) के सम्बन्ध में परिसर के स्ववित्तपोषित संकायवार शिक्षकों के साथ 10 नवम्बर, 2021 को एक महत्वपूर्ण बैठक की।

- डॉ० राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय में तृतीय श्रेणी कर्मचारी परिषद एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी संघ का शपथ ग्रहण समारोह विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानन्द सभागार में 11 नवम्बर, 2021 को सम्पन्न हुआ।

- अवध विश्वविद्यालय एवं अंतर्राष्ट्रीय भौतिकी अकादमी, प्रयागराज के संयुक्त तत्वावधान में रीसेन्ट एडवांसेस इन अर्थ साइंसेज विषय पर तीन दिवसीय(26–28 अक्टूबर, 2021) अंतर्राष्ट्रीय ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

- अवध विश्वविद्यालय के व्यवसाय प्रबन्ध एवं उद्यमिता विभाग में 27 अक्टूबर, 2021 को कैम्पस प्लेसमेंट का आयोजन किया गया।

कृषकों के पास प्रति हेक्टेयर भूमि की उपलब्धता घटी है: प्रो0 सिंह

26 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग में उत्तर प्रदेश उत्तराखण्ड आर्थिक संघ के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय अर्थ व्यवस्था से सम्बंधित विभिन्न आर्थिक आयामों विषय पर विशिष्ट व्याख्यान माला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि गिरि शोध संस्थान लखनऊ के प्रो0 ए0 के0 सिंह ने राष्ट्रीय एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि के स्थान के बारे में बताते हुए कहा कि ग्रामीण एवं राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का उत्पादन निरन्तर घट रहा हैं। जबकि कृषि क्षेत्र में श्रम शक्ति अत्यधिक निर्भरता बनी हुई है। उन्होंने बताया कि वर्ष 1970–71 में सकल घरेलू उत्पाद में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का श्रम शक्ति का अनुपात 80 : 60 रहा है। जो कि वर्ष 2011–12 में घट कर 76 प्रतिशत से 46 रह गया है। प्रो0 सिंह ने बताया की ग्रामीण अर्थव्यवस्था से सम्बंधित कृषकों के पास प्रति हेक्टेयर भूमि की उपलब्धता घटी हैं। यदि हमें अर्थव्यवस्था का सम्पूर्ण विकास करना है तो कृषि क्षेत्र में संरचना. त्मक विकास के साथ जोत के औसत आकार को बढाना होगा तभी कृषि उपज के विपणन व्यवस्था में सुधार के साथ हम सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था का विकास कर सकते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 सिंह ने कहा कि आज भी भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ कृषि क्षेत्र ही है और इस क्षेत्र को संरचनात्मक एवं तकनीकी रूप से विकसित करते हुए देश की अर्थव्यवस्था का विकास सुनिश्चित कर सकते है। विशिष्ट व्याख्यान में उत्तर–प्रदेश उत्तराखण्ड आर्थिक संघ के अध्यक्ष आईएचडी नई दिल्ली के प्रो0 रवि श्रीवास्तव ने बताया कि आज कृषि क्षेत्र ही एक ऐसा क्षेत्र है जोकि महामारी के दौर में भी हमें सुरक्षित करता रहा है।

कुमाँयु विश्वविद्यालय नैनीताल के पूर्व कुलपति प्रो0 डी0के0 नौटियाल एवं इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय प्रयागराज के प्रो0 प्रहलाद ने विषय पर प्रस्तावना उद्बोधन प्रस्तुत किया। समापन सत्र में अवध विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो0 पी0के0 सिन्हा ने अपने उद्बोधन में यह बताया की आज प्राथमिक क्षेत्र का जी0एन0पी0 योगदान घट रहा हैं जबकि कृषि क्षेत्र में निर्भरता अभी कम नहीं हुई है। कार्यक्रम में धन्यवाद ज्ञापन हेमवती नन्दन बहुगुणा विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड के आर0एस0 नेगी एवं एम0 सी0 सती ने किया। कार्यक्रम का संचालन एवं प्रतिभागी अतिथियों का स्वागत एवं संक्षिप्त विवेचन अर्थशास्त्र एवं ग्रामीण विकास विभाग के विभागाध्यक्ष तथा उत्तर–प्रदेश उत्तरा खण्ड आर्थिक संघ के महासचिव प्रो0 विनोद कुमार श्रीवास्तव ने किया।

अवध विश्वविद्यालय का दीक्षांत समारोह 15 दिसम्बर को प्रस्तावित

29 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के कौटिल्य प्रशासनिक भवन के सभागार में 15 दिसम्बर, 2021 को प्रस्तावित दीक्षांत समारोह को लेकर विश्वविद्यालय के कुल. पति प्रो0 रविशंकर सिंह ने संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, समन्वयकों एवं अधिकारियों से दीक्षांत समारोह के आयोजन को लेकर समिति के गठन पर विस्तृत चर्चा की। इसके सकुशल निपटाने के लिए विभिन्न समितियों का गठन किया जायेगा। सभी समिति को उनके दायित्वों से शीघ्र अवगत करा दिया जायेगा। कुलपति प्रो0 सिंह ने बताया कि पूर्व की भांति इस दीक्षांत समारोह में कुर्ता, पायजामा रहेगा। इसके साथ पीले रंग की हॉफ सदरी रहेगी। दी क्षांत समारोह के परिपेक्ष्य में विश्वविद्यालय के विभागों में दीक्षांत सप्ताह का आयोजन होगा। इसमें विषय विशेषज्ञों के व्याख्यान होंगे। बैठक में वित्त अधिकारी प्रो0 चयन कुमार मिश्र, कुलसचिव उमानाथ, मुख्य नियंता प्रो0 अजय प्रताप सिंह, सहित अन्य शिक्षक एवं कर्मचारी उपस्थित रहें।

अखण्ड भारत के निर्माता थे सरदार वल्लभभाई: राज्यपाल

31 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय की कुलाधिपति एवं प्रदेश राज्यपाल श्रीमती आनन्दीबेन पटेल ने कहा कि आज पूरा देश राष्ट्रीय एकता दिवस सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के रूप मना रहा है। 562 से ज्यादा रियासतों को एक करके भारत को अखण्ड बनाया है। इसलिए हम सभी सरदार पटेल को लौह पुरूष बोलते है। उक्त विचार राज्यपाल ने डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में राष्ट्रीय एकता दिवस पर सरदार पटेल राष्ट्रीय एकात्मकता भवन, मल्टीपरपज लेक्चर हाल कॉम्प्लेक्स भवन तथा इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी भवन के वर्चुअल शिलान्यास कार्यक्रम में कही। राज्यपाल ने कहा कि गुजरात में सरदार पटेल का जन्म हुआ। अहमदाबाद में पार्षद का चुनाव हुआ और वे जीत नहीं पाये। फिर जब उपचुनाव हुए उसमें पटेल चुने गए। कुलाधिपति ने बताया कि वर्तमान में मेयर बोला जाता है। लेकिन उस समय प्रमुख बोला जाता था वे अहमदाबाद के प्रमुख बने। उन्होंने बताया कि एक पार्षद सिटी का कैसे विकास कर सकता है, उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। इसके लिए सभी को संकल्प लेना चाहिए। सरदार पटेल ने वहां के विकास के लिए बहुत बड़े कदम उठाये। उन्होंने अपने समय में ड्रेनेज का कार्य करवाया। वे दूरदर्शी थे। सोच समझकर कार्य किया करते थे जो आज देश के प्रधानमंत्री मोदी जी कर रहे है।

कुलाधिपति ने अमूल डेरी के बारे बताते हुए कहा कि यह आजादी के पहले की है और सिर्फ पांच सौ लीटर दूध से इसकी शुरूआत हुई थी। इस तरह की दूरदृष्टि वाले नेता समाज के लिए अपना जीवन लगा देते है। स्टैच्यू ऑफ यूनिटी सरदार वल्लभभाई पटेल की कर्तव्य निष्ठा को दर्शाती है। पूरे विश्व से लोग इसे देखने आते है। इसे सिर्फ देखना ही नही है बल्कि इससे प्रेरणा लेकर आगे बढ़ना है। उन्होंने विश्वविद्यालय के कुलपति से कहा कि अपने यहां के 100 या 150 छात्रों को ले जाकर वहां का भ्रमण जरूर कराये ताकि उससे प्रेरणा पा सके। हमारा देश विश्वगुरू बने और पूरे विश्व में प्रतिष्ठा प्राप्त करें।

अयोध्या सांसद लल्लू सिंह ने कहा कि जिस समय देश आजाद हुआ उस समय परिस्थिति बहुत विषम थी। ऐसे में सरदार पटेल जी ने पूरे देश को एकजुट करने का कार्य किया। उस समय पूरा देश और कांग्रेस पार्टी के पदाधिकारी भी चाहते थे कि पटेल जी प्रधानमंत्री के रूप में कार्य करें। परन्तु उन्होंने सहज भाव से कहा कि पं. नेहरू इस समय की आवश्यकता है उन्हें प्रधानमंत्री होना चाहिए।

स्वागत उद्बोधन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने बताया कि राष्ट्रीय एकता दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के तीन नवीन भवनों का शिलान्यास किया गया है। जिसमें सरदार पटेल राष्ट्रीय एकात्मता भवन में पब्लिक पालिसी एण्ड गर्वनेन्स, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, सामरिक एवं रक्षा अध्ययन सहित अन्य ग्रामीण और प्रसार अध्ययन से सम्बन्धित विषयों का पठन–पाठन किया जायेगा। इस भवन के निर्माण की लागत रू0 1098.44 लाख है। इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी भवन में बी०फार्मा व डी०फार्मा विषयों का पठन–पाठन किया जायेगा। जिसके निर्माण की लागत रू0 1359.44 लाख है। वर्तमान में डी०फार्मा में 60 सीट तथा बी०फार्मा में 60 सीटों पर शत–प्रतिशत प्रवेश किया जा चुका है तथा इस सत्र से पठन–पाठन प्रारम्भ हो गया है। मल्टीपरपज लेक्चर हाल काम्प्लेक्स भवन में बी०ए०, बी०काम०, एल०एल०बी०., बी०एस–सी० पाठ्यक्रमों का पठन–पाठन किया जायेगा। इस भवन के निर्माण रू०998.38 लाख का व्यय होगा।

सरदार पटेल राष्ट्रीय एकात्मकता के समन्वयक प्रो0 शैलेन्द्र वर्मा ने कहा कि वर्तमान भारत का भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिदृश्य सरदार वल्लभभाई पटेल के दृढ़ निश्चय एवं स्पष्ट दृष्टिकोण का परिणाम है। उनका राष्ट्र निर्माण में विशेष योगदान रहा है। बारदोली सत्याग्रह के दौरान नेतृत्व के लिए उन्हें सरदार की उपाधि मिली। भारत के सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न से उन्हें सम्मानित किया गया। अपनी सूझबूझ से जटिल कार्य को भी सहजता से सुलझा देते थे। उनकी विचारधारा का अपानते हुए उसे आत्मसात करना ही उनकी प्रति सच्ची श्रंद्धाजलि होगी।

कार्यक्रम का संचालन इंजीनियर मनीषा यादव ने किया, अतिथियों के प्रति धन्यवाद ज्ञापन अधिष्ठाता छात्र कल्याण प्रो0 नीलम पाठक ने किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में समिति के डॉ0 विनोद चौधरी, डॉ0 विजयेन्दु चतुर्वेदी, डॉ0 राजेश सिंह कुशवाहा, डॉ0 नितेश दीक्षित, आशीष पटेल की विशेष भूमिका रही।

इस अवसर पर कुलसचिव उमानाथ, प्रो0 अशोक शुक्ल, प्रो0 एसएस मिश्र, प्रो0 अनुपम श्रीवास्तव, प्रो0 आशुतोष सिन्हा, प्रो0 आरके तिवारी, प्रो0 आरके सिंह, प्रो0 राजीव गौड़, प्रो0 फारूख जमाल, प्रो0 शैलेन्द्र कुमार, प्रो0 के0के वर्मा, प्रो0 गंगा राम मिश्र, प्रो0 रमापति मिश्र, प्रो0 अनूप कुमार, प्रो0 मोहित गंगवार, डॉ0 गीतिका श्रीवास्तव, डॉ0 महेन्द्र सिंह, सहायक कुलसचिव डॉ0 रीमा श्रीवास्तव, मोहम्मद सहील, डॉ0 सुरेन्द्र मिश्र, ओएसडी डॉ0 शैलेन्द्र सिंह, डॉ0 अनिल कुमार, डॉ0 सिंघु सिंह डॉ0 मुकेश वर्मा, डॉ0 वन्दिता पाण्डेय, इंजीनियर चन्दन अरोड़ा, डॉ0 अंशुमान पाठक, डॉ0 निहारिका सिंह, डॉ0 संदीप गुप्ता, इंजीनियर आरके सिंह, इंजीनियर परिमल त्रिपाठी, इंजीनियर विनीत सिंह, इंजीनियर राजीव कुमार, डॉ0 त्रिलोकी यादव, कर्मचारी संघ के डॉ0 राजेश सिंह, राजेश पाण्डेय, प्रोग्रामर रवि मालवीय, गिरीशचंद्र पंत, सुरेन्द्र प्रसाद सहित बड़ी संख्या में शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्र–छात्राओं की उपस्थिति उल्लेखनीय रही।

विद्यार्थियों ने कारागार एवं चिकित्सालय का किया भ्रमण

23 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के एक्टीविटीज क्लब व महिला अध्ययन केन्द्र द्वारा विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राओं को अयोध्या के जिला कारागार एवं जिला चिकित्सालय का भ्रमण कराया गया। विश्वविद्यालय की कुलाधिपति एवं प्रदेश की राज्यपाल श्रीमती आनन्दीबेन पटेल के दिशा–निर्देशन में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह के आदेशानुसार विभिन्न क्षेत्रों के क्रियाकलापों से अवगत कराने के लिए एक्टीविटीज क्लब व महिला अध्ययन केन्द्र की ओर से डॉ0 मुकेश कुमार वर्मा, डॉ0 मनीष सिंह, डॉ0 संघर्ष सिंह तथा डॉ0 स्नेहा पटेल ने जिला कारागार एवं जिला चिकित्सालय अयोध्या का छात्र–छात्राओं के दल को भ्रमण कराया। मौके पर जेलर गिरीश कुमार ने छात्र–छात्राओं को जेल के नियमों एवं उनके प्राविधानों से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि इस समय जेल में 1319 कैदी है जिनकी दिनचर्या नियमित होती है। इसके साथ ही सभी कैदी स्वयं सब्जियां उगाते है। उन्होंने छात्रों से कहा कि कोई ऐसा कार्य न करें, जो कैदी बनने पर मजबूर कर दे। ऐसा करने से वास्तविक जिदंगी से बिल्कुल कट जायेंगे। भ्रमण के दौरान छात्रों ने अशफाक उल्ला खां शहीद स्थल पर श्रद्वाजंलि भी दी।

राष्ट्र की एकता को अक्षुण्ण बनाने में सरदार पटेल का अद्वितीय योगदान रहा : मंडलायुक्त

26 अक्टूबर। डॉ0 राममनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय के स्वामी विवेकानंद सभागार में दीपोत्सव के मद्देनजर राष्ट्रीय एकता दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मंडलायुक्त एम0पी0 अग्रवाल, कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह एवं बिग्रेडियर एनवी नाथ द्वारा पूर्व में आयोजित निबंध व पोस्टर प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

मुख्य अतिथि मंडलायुक्त एम0पी0 अग्रवाल ने कहा कि राष्ट्र की एकता को अक्षुण्ण बनाने में लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल का अद्वितीय योगदान रहा है जिनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व से आज के युवाओं को राष्ट्रभक्ति एवं राष्ट्र के चतुर्दिक विकास का मूल मंत्र अपनाना चाहिए। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि ब्रिगेडियर एवी नाथ ने कहा कि युवाओं को अपने लक्ष्य को स्पष्ट रखते हुए राष्ट्र के प्रति निष्ठा एवं समर्पण की भावना से जीवन मे आगे बढ़ते रहना चाहिए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो0 रविशंकर सिंह ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगो को राष्ट्र के प्रति निष्ठा एव देशभक्ति की शपथ दिलाते हुए सरदार वल्लभभाई पटेल के वैचारिक पक्ष पर प्रकाश डाला।

कार्यक्रम का शुभारम्भ सर्वप्रथम अतिथियों द्वारा परिसर स्थित सरदार वल्लभ भाई पटेल, डॉ0 राममनोहर लोहिया और महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करके किया गया। इसके उपरांत सभागार में सरदार पटेल के जीवन पर एक डॉक्यूमेंट्री प्रस्तुत की गई। कार्यक्रम में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें एसडीएम रुदौली ने विश्वप्रसिद्ध पार्श्व किशोर कुमार के नगमों से समां बांध दिया। इसके बाद विश्वविद्यालय के छात्र कार्तिकेय, गौरव, चित्रेश, अजीत शुक्ल, जान्हवी कीर्ति एवं अन्य छात्र–छात्राओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का विषय प्रवर्तन प्रो0 शैलेन्द्र कुमार वर्मा ने किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का संचालन डॉ0 अंकित मिश्र एवं धन्यवाद ज्ञापन छात्र अधिष्ठाता प्रो0 नीलम पाठक द्वारा किया गया। इस अवसर कुलसचिव उमानाथ, प्रो० सी० के0 मिश्र, प्रो० अशोक शुक्ला, प्रो० हिमांशु शेखर सिंह, प्रो० आर0के0 तिवारी, प्रो० फारुख जमाल, प्रो0 के0के0 वर्मा, प्रो0 एस0 एस0 मिश्र, मोहम्मद साहिल सम्मिलित हुए।